महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

कुल गीत

इस युगजेता ज्योति पीठ का हो अभिनंदन वंदन।
ज्ञान योग से मानव श्रम का शत–शत कोटि नमन।।

सस्य श्यामला वीर भूमि के कीर्ति कलश की जय हो।
गंगा जमना की धरती का पावन भाग्य उदय हो।।
इस वरदानी कृषि भूमि का दिग्विजयी जयकारा हो।
भूख पराजित होगी ऐसा विजय घोष का नारा हो।।
स्वाभिमान से जीना इस धरती की पावन पूँजी है।
यहाँ कभी चेतक की टापें टपटप–टपटप गूँजी है।।
इसी धरा पर फिर मानव के श्रम का हो अभिनंदन।
इस युगजेता ज्योति पीठ का हो अभिनंदन वंदन।

यहाँ ज्ञान के विज्ञानी चिंतन पर शोध हुआ है।
मानवता की पुण्य कलाओं का युग बोध हुआ है।।
जन–जन की कल्याण साधना महिमावंत हुई है।
भरत भूमि की जय जिजीविषा ज्योतिर्मन्त हुई है।।
यहाँ ज्ञान में संजीवित विद्या की दिव्य प्रभा।
अनुशीलन का कर्म, कर्म में कौशल कीर्ति विभा।।
यहाँ कभी राणा प्रताप ने शौर्य जगाया था।
स्वाभिमान का कालजयी संकल्प उठाया था।।
राष्ट्र देवता के मंदिर को पावन शब्द नमन।
इस युगजेता ज्योति पीठ का हो अभिनंदन वंदन।

– पंडित नरेन्द्र मिश्र